मुगल काल में फारसी साहित्य (16 वीं शताब्दी)

फारसी इतिहास लेखन की एक लंबी ऐतिहासिक परंपरा रही है। मध्यकालीन भारत में फारसी भाषा एवं साहित्य का विशिष्ट स्थान था, फारसी भाषा की न सिर्फ प्रशासनिक कारणों से बल्कि समकालीन इतिहास लेखन में भी प्रमुख भूमिका रही। यद्यपि भारत में इतिहास लेखन की परंपरा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता फिर भी मध्यकाल में इतिहास लेखन को इस्लाम की शानदार धरोहर माना जाता रहा है। परंतु इसके बावजूद मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन की जो परंपरा देखने को मिलती है वह अरबी ,ईरानी एवं हिंदुस्तानी विशेषताओं का मिलाजुला परिणाम थी, जिसकी अपनी कुछ प्रमुख विशेषताएं थीं। जैसे-

1. राजनीतिक घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया जाने लगा, उदाहरण के लिए बरनी की तारीख-ए -फिरोजशाही एवं मिनहाजुद्दीन सिराज की तबकाते नासिरी आदि में यह देखने को मिलता है।
2. अब घटनाओं की तिथि क्रम पर विशेष जोर दिया जाने लगा था।साथ ही इतिहास लेखन का क्षेत्रीय विस्तार भी हुआ था।ण
3. इतिहास लेखन पर लेखकों की व्यक्तिगत भावनाओं एवं विचारों का प्रभाव भी देखा जाने लगा। जिसे बरनी एवं बदायूंनी के लेखन में देखा जा सकता है।

4. इस समय इतिहास लेखन में धर्म का प्रभाव अधिक रहा क्योंकि समकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण में धार्मिक दर्शन का अधिक महत्व था, फिर शासकों की नीतियों में धर्म को अपने हितों के संदर्भ में विशेष महत्व दिया जाता रहा था।

यद्यपि सल्तनत काल में इतिहास लेखन का पर्याप्त विकास हो चुका था परंतु 16वीं शताब्दी में मुगलों के अंतर्गत इतिहास लेखन की परंपरा और अधिक व्यवस्थित एवं सुदृढ़ हुई, इसका दायरा विस्तृत हुआ ।साथ ही विविधता भी बढी इसके कुछ प्रमुख कारण थे। जैसे-

1. मुगल शासकों के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर इतिहास लेखन में रूचि ली गई ।उन्होंने न सिर्फ इसे प्रोत्साहित किया बल्कि स्वयं भी अपने बारे में लिखकर इसके महत्व को स्पष्ट किया ।उदाहरण के लिए बाबर ने बाबरनामा एवं जहांगीर ने तुजके जहांगीरी के नाम से इतिहास लेखन किया।

2. साथ ही मुगल बादशाहों ने अपना इतिहास लिखवाने के लिए प्रसिद्ध विद्वानों एवं इतिहासकारों को नियुक्त किया और उनको वह सभी आवश्यक सरकारी कागजात एवं दस्तावेज उपलब्ध करवाए जो उनके इतिहास लेखन को प्रमाणिकता प्रदान कर सके। अतः इस प्रकार के सरकारी इतिहास लेखनो के ऊपर भरोसा किया जा सकता है परंतु इसकी अपनी एक सीमा भी थी जैसे यह लेखक शासन के विरुद्ध कुछ नहीं लिख सकते थे। अकबरनामा, पादशाहनामा एवं आलमगीरनामा इसी श्रेणी के ऐतिहासिक ग्रंथ हैं।

3. सरकारी इतिहासकारों के अतिरिक्त इस समय दरबार से बाहर के शिक्षित व्यक्तियों के द्वारा भी इतिहास लेखन किया जा रहा था। इन्हें किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता एवं दबाव का सामना नहीं करना पड़ रहा था। यह आलोचना करने के लिए स्वतंत्र थे परंतु इसमें व्यक्तिगत भावनाओं एवं पूर्वाग्रह का भी स्थान बना हुआ था जैसे निजामुद्दीन अहमद की तबकात- ए- अकबरी प्रमुख है।
4. मुगल सत्ता की स्थिरता एवं मजबूती ने भी इतिहास लेखन को प्रोत्साहित किया।साथ ही कागज की गुणवत्ता एवं जिल्दसाजी की वैज्ञानिक प्रगति भी इतिहास लेखन में सहायक हुई।

अतः मुगल शासकों के समय इतिहास लेखन का पर्याप्त विकास हुआ। इसको समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण समकालीन फारसी तारीखों पर चर्चा करना आवश्यक होगा।

बाबरनामा- मुगल साम्राज्य के संस्थापक जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर ने इसमें अपनी जीवन संबंधी घटनाओं को स्वयं लिखा है।इसे तुजके-बाबरी के नाम से भी जानते हैं। यह मूलता तुर्की भाषा में लिखी गई है परंतु बाबर के सद्र-उस-सदर शेख जेतउद्दीन ख्वाजा ने इसका फारसी भाषा में अनुवाद किया। बाद में 1826 में इसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ।

बाबरनामा में बाबर ने 1504 से 1529 तक अपनी मृत्यु से एक वर्ष पहले तक की घटनाओं को उल्लिखित किया है। इसे तीन भागों में

बांट कर अध्ययन किया जाता है। पहले भाग में बाबर का फरगना के तख्त से संबंधित उसके संघर्ष का वर्णन मिलता है। दूसरे भाग में हिंदुस्तान में उसके प्रवेश एवं यहां पर उसके आखिरी युद्ध तक का वर्णन मिलता है एवं तीसरे भाग में हिंदुस्तान के हालात के बारे में भी लिखा है।

बाबर ने बाबरनामा में हिंदुस्तान के बारे में विस्तार से लिखा है, उसने न सिर्फ यहां की राजनीतिक दशा का वर्णन किया है बल्कि यहां की प्राकृतिक परिस्थितियों को भी उतना ही महत्व दिया है। विदेशी होने की वजह से यहां की तमाम चीजें उसके लिए रहस्य थी। अतः आश्चर्यपूर्वक उसने इनका वर्णन किया। वह लिखता है "हिंदुस्तान एक विचित्र देश है और हमारे इलाकों को देखते हुए एक नई दुनिया है, इसके पहाड़, दरिया, जंगल और रेगिस्तान, इसके कस्बे, इसके खेत,इसके जानवर और पौधे, इसके लोग और इसकी भाषाएं ,इसकी वर्षा और हवाएं सब की सब भिन्न हैं।"

इसी प्रकार बाबर भारत की आर्थिक समृद्धि से भी बहुत प्रभावित था। उसने इसे सोने-चांदी का देश कहा परंतु उसने हिंदुस्तानियों की कुछ मामलों में आलोचना भी की। इन्हें सामाजिक व्यवहार से अपरिचित एवं अक्लमंदी और प्रतिभा से विमुख कहा। जबकि उसकी यह बात अन्य स्रोतों से खंडित हो जाती है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्रोत न सिर्फ बाबर के काल के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि इसमें हुमायूं के शुरुआती दौर का भी महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है और उसने हुमायूं की अच्छाइयों एवं बुराइयों का निष्पक्षता से वर्णन किया है।

इन सभी विशेषताओं के साथ-साथ बाबरनामा की अपनी कुछ

सीमाएं भी रहीं जैसे बाबर ने समकालीन हिंदुस्तान की राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन करते समय कुछ प्रमुख राज्य जैसे खानदेश उड़ीसा, सिंध एवं कश्मीर के बारे में कुछ नहीं कहा। इसके अतिरिक्त उसके वर्णन के बीच-बीच लंबा समयाअंतराल भी देखने को मिलता है ,जिसके लिए अन्य स्रोतों पर निर्भर होना पड़ता है।

हबीब-उस-सियार- बाबर के काल के लिए बाबरनामा के समान खोंदमीर की हबीब-उस-शियार भी एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें 1521 से 1529- 30 के बीच के मध्य एशिया के हालात का वर्णन है। इसे दुनिया के एक आम इतिहास की तरह लिखने का प्रयास किया गया क्योंकि बाबर मध्य एशिया से संबंधित था। अतः वहां के हालात जानने के लिए इस ग्रंथ का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसी काल में मिर्जा हैदर दोगलत की तारीखे-रसीदी का भी विशेष स्थान है।यह मध्य एशिया की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालती है, इसमें बाबर के पूर्वजों का विस्तार से वर्णन है। मिर्जा हैदर हुमायूं का करीबी था ,अतः उसने हुमायूं काल की घटनाओं का विश्वसनीयता से वर्णन किया, विशेषकर कन्नौज के युद्ध एवं कामरान की हुमायूं के प्रति धोखेबाजी का वह महत्वपूर्ण वर्णन करता है।

कानूने-हुमायूंनी- हुमायूं के काल का एक प्रमुख ग्रंथ है।इसकी रचना भी खोंदमीर ने की ।इसमें 1533- 34 की घटनाओं का वर्णन है। खोंदमीर ने हुमायूं की गतिविधियों का आंखों देखा वर्णन किया है। राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ दरबारी रीति-रिवाजों एवं परंपराओं का विस्तार से वर्णन किया है। परंतु इसकी सीमा भी है,वह

हुमायूं की अधिक से अधिक चापलूसी करता है, उसे सिकंदर-ए-आजम एवं खुदा का साया जैसी पदवी भी देता है।

हुमायूंनामा-यह बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम के द्वारा लिखा गया है ।इसमें उसने अपने पिता बाबर के बारे में भी कुछ सीमित शब्दों में विवरण दिया है परंतु अपने सौतेले भाई एवं बाबर के उत्तराधिकारी हुमायूं के बारे में बड़े रुचि के साथ विस्तार से लिखा है। वह स्वयं लिखती है कि हुमायूं उसे बहुत प्यार करता था और उसकी कन्नौज की हार के बाद वह काबुल में रही थी और जब 1545 में हुमायूं की हिंदुस्तान वापसी हुई तो वह अति प्रसन्न हुई।

हुमायूंनामा में हुमायूं एवं उसके भाइयों कामरान, हिंदाल एवं असकरी के परस्पर संबंधों ,आपसी संघर्षों का विस्तार से आंखों देखा वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त हुमायूं के संपूर्ण जीवन की लड़ाईयों, उसके दुखों, संकटों का वर्णन बहुत प्रमाणिकता के साथ किया गया है। राजनीतिक घटनाओं के अलावा यह स्रोत मुगलों के सामाजिक रीति-रिवाजों, उनके हरम एवं शादी-विवाह की रस्मों का विस्तार से जानकारी देता है। गुलबदन बेगम अपने भाई हिंदाल की शादी के रीति-रिवाजों एव रस्मो का बहुत ही रोचक एवं विस्तृत विवरण देती है।

तजकिरातुल-वाकयात- यह ग्रंथ हुमायूं के एक वफादार नौकर जोहर आफतावची के द्वारा बादशाह अकबर के आदेश पर लिखा गया। जोहर आफतावची काफी समय तक हुमायूं की सेवा में रहा था और उसकी मृत्यु के 30 साल बाद 1586- 87 में इस किताब को

लिखना शुरू किया था। यह तजकिरा कई अध्यायों में विभाजित है। पहले चार अध्यायों में हुमायूं की चौसा के युद्ध में हार एवं उसके दरबदर हो जाने तक का वर्णन मिलता है।बिलग्राम की लड़ाई में हुमायूं की हार और उसके सिंध भाग जाने का विवरण पांचवे एवं छठे अध्याय में मिलता है। साथ ही सातवें से उननीसवें अध्याय तक हुमायूं के सिंध में दर-बदर भटकने, ईरान में ठहरने एवं उसके काबुल, कंधार जीतने तक के हालातों को वर्णित किया गया है ।अंतिम छः अध्यायों में उसकी हिंदुस्तान वापसी, उसकी विजयों एवं अकबर के सिंहासन पर बैठने तक का विवरण मिलता है

जैसा कि यह तजकिरा जोहर ने अकबर के आदेश पर लिखा था और जोहर की यादों पर आधारित है ।अतः इसमें तिथियों को लेकर गलतियां मिलती है। साथ ही वह हुमायूं की कमियों को नजरअंदाज करता है जो इसकी सीमाएं हैं। परंतु हुमायूं काल की सूचना प्राप्त करने में यह स्रोत बहुत अहम है।

वाकयात-ए-मुस्ताकी- यह किताब रिजी उल्लाह मुस्ताकी द्वारा लिखी गई है। इसमें लोदी एवं सूर अफगान शासकों के हालातों को विस्तार से वर्णित किया गया है। यह स्रोत अपने काल के राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक पहलुओं पर वृहद जानकारी प्रदान करता है ।

इसमें अफ़गानों की कबीलाई संस्कृति को भी व्यक्त किया गया है। सिकंदर लोदी एवं शेरशाह के शासन काल की राजनीतिक घटनाओं,

न्याय प्रशासन, फौजी हालातों की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अलावा यहां से हिंदुओं के सामाजिक रीति-रिवाजों एवं धार्मिक उत्सवों की भी जानकारी प्राप्त होती है।

परंतु इसकी अपनी कुछ सीमाएं भी है जैसे यह अव्यवस्थित ढंग से किस्सों एवं कहानियों के तौर पर लिखी गई है, कहीं-कहीं पर प्रमाणिकता का पूर्णता अभाव है ।अतः इतिहासकार को इसे बड़ी ही सावधानी से इसका उपयोग करना चाहिए।

तोहफा-ए-अकबरशाही- यह किताब अकबर के आदेश पर अब्बास खान सरवानी के द्वारा लिखी गई। इसमें शेरशाह के शासन काल को विस्तार से वर्णित किया गया है। वैसे यह किताब सुल्तान बहलोल लोदी के काल से शुरू होती है और शेरशाह के अंतिम कालो तक की प्रशासनिक व्यवस्था की विस्तार से जानकारी देती है।

तजकिरा-ए-हुमायूं व अकबर- इस फारसी स्रोत की रचना अकबर के एक शाही रसोई के प्रबंधक वाजिद वयात ने 1587 ईस्वी में की थी। यह पुस्तक उसने अकबर के इतिहास लिखने के आदेश से प्रेरित होकर लिखी क्योंकि अकबर ने आदेश दिया था कि उसके पिता हुमायूं के काल के विषय में जो भी किसी को पता है वह इसे

लिपिबद्ध करें।

बायजिद 1544 ईस्वी में ईरान में हुमायूं से मुलाकात होने के पश्चात से उसी के साथ रहा था। इस स्रोत से हुमायूं के परिवार एवं उसकी शाही सरदारों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही अकबर के शासन काल के बारे में भी सूचना प्राप्त करने का यह प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत है।

नफाइस-उल-मासिर- यह मीर अली काजवीनी के द्वारा कविताओं के रूप में लिखी गई पुस्तक है।इसमें 1565-66 से 1574 -75 तक के हालात बयान किए गए हैं।यहां से अकबर के गुजरात एवं राजपूताना के अभियानों के बारे में जानकारी मिलती है। साथ ही यह दरबारी संगीतकारों एवं शायरों की भी विस्तार से चर्चा करती है।

तारीख -ए -अकबरी- इसकी रचना आरिफ कंधारी के द्वारा की गई। इसमें 1545 से लेकर 1585 तक के काल की घटनाओं को कवर किया गया है। इसमें अकबर के शासन प्रणाली एवं सुधारों का जिक्र मिलता है। अकबर के काल की ही एक अन्य पुस्तक **तारीख-ए-अलफी** है, जिसे अकबर के आदेश से पैगंबर मोहम्मद के बाद में

आने वाले सभी मुस्लिम शासकों के आम इतिहास के तौर पर लिखने का प्रयास किया गया है।

अकबरनामा -अकबर के काल की यह प्रसिद्ध तवारीख अकबर के प्रिय सलाहकार अबुल फजल के द्वारा लिखी गई। सर्वप्रथम अबुल फजल के जीवन के बारे में संक्षिप्त रूप से जान लेना आवश्यक होगा।अबुल फजल के पूर्वज सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर में आकर बसे और 1506 में यहीं पर अबुल फजल के पिता शेख मुबारक का जन्म हुआ।शेख मुबारक ने अपने समय के बड़े-बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की थी। 1551 में अबुल फजल का जन्म आगरा में हुआ।उसकी आरंभिक शिक्षा पिता के सानिध्य में ही हुई और जल्द ही उसने परंपरागत शिक्षा पूरी कर ली। धर्म एवं दर्शनशास्त्र पर भी अपनी पकड़ मजबूत कर ली। लगभग 10 वर्षों तक 25 वर्ष की अवस्था तक विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करता रहा।धार्मिक वार्ताओं में शामिल हुआ,जिसके कारण उसमें धर्म के प्रति उदारता का भाव बढ़ गया।साथ ही वह कट्टर मुस्लिम उलेमाओं के व्यवहार से भी परिचित हुआ।

जब 1574 में अबुल फजल अकबर की सेवा में आया तो वह अपनी

सूझबूझ और उदार विचारों के कारण जल्द ही बादशाह के करीब आ गया ।1590 में उसे अकबर के काल का इतिहास लिखने का आदेश मिला,इसके लिए अबुल फजल को सभी सरकारी दस्तावेजों के इस्तेमाल करने की सहूलियत भी दी गई। उसने शाही फरमानों एवं दूसरे दस्तावेजों का बड़ी ही सूझबूझ के साथ प्रयोग किया। साथ ही उसने प्रशासन के कुछ अधिकारियों की याददाश्तों का भी प्रयोग किया।लोगों से पूछताछ का भी सहारा लिया गया परंतु अबुल फजल ने इन सभी दस्तावेजों एवं मौखिक सूचनाओं का बड़ी ही सावधानी पूर्वक अपने इतिहास लेखन में उपयोग किया।

अबुल फजल का इतिहास लेखन का मुख्य उद्देश्य बादशाह अकबर की महानता को साबित करना था।उसकी अध्यात्मिक रुचि एवं सुलह -ए-कुल की नीति को प्रचारित करना रहा था। अबुल फजल का मानना था कि अकबर महान है और वह खुदा की देन है, जिसके द्वारा गलती करने की कोई गुंजाइश नहीं है। सात वर्ष की मेहनत के बाद अबुल फजल ने 1597-98 में अकबरनामा को अकबर के सामने पेश किया। यह तीन भागों में बटा हुआ था,इसका तीसरा भाग आईने अकबरी के नाम से जाना जाता है।

पहले भाग में अकबर के जन्म से लेकर 1572 तक की घटनाओं को

वर्णित किया गया है। साथ ही इसमें सृष्टि की रचना,विभिन्न धर्मों की विचारधारा,पैगंबर मोहम्मद का वर्णन एवं अकबर के पूर्वजों का उल्लेख किया गया है,जबकि दूसरे हिस्से में अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर 46वें वर्ष तक की घटनाओं का उल्लेख है।तीसरा भाग जिसे आईने अकबरी कहा जाता है, यही अकबरनामा का मुख्य भाग माना जाता है, इसकी रचना में अबुल फजल ने बड़ी ही सूझबूझ का परिचय दिया।आईने अकबरी के पॉच हिस्से हैं इसमें पहले तीन हिस्सों में अकबर के प्रशासन के नियम कानूनों को वर्णित किया गया है। चौथे हिस्से में हिंदुस्तान की जातियों, ऋतुओं, फसलों, प्राकृतिक सौंदर्य को चित्रित किया गया है। हिंदुओं के रीत-रिवाजों,राजनीतिक, धार्मिक जीवन को दर्शाया गया है। पांचवें हिस्से में अकबर एवं अबुल फजल की कहावतें और आत्मकथा दी गई है।

अबुल फजल ने अकबरनामा की रचना अकबर को महान साबित करने के उद्देश्य से की थी।उसे इंसान-ए-कामिल साबित करने का प्रयास भी किया। अकबर की प्रत्येक नीति और उसके कार्यों को दैवीय कार्य के रूप में दर्शाने का प्रयास किया। इस रचना के माध्यम से यह प्रचारित करने की कोशिश की गई कि इंसान-ए-कामिल होने के नाते पादशाह की फरमावदारी जरूरी है,जिससे बादशाह की

उदारता,सहनशीलता,न्याय और अमन पर आधारित शासन प्रणाली का लाभ अधिक से अधिक जनसामान्य तक पहुंच सके।

अबुल फजल ने इतिहास लेखन के पुराने तरीकों का खंडन किया, जिसमें इस्लाम एवं हिंदू धर्म के परस्पर टकराव को अधिक महत्व दिया जाता था। कट्टरता ,संकुचित सोच एवं नफरत की नीतियों का उसने खंडन किया। वह हिंदू एवं मुसलमान के संघर्ष के तौर पर इतिहास नहीं लिखना चाहता था। वह पादशाह के पक्ष में लड़ने वालों के लिए मुजाहिदान-ए-इस्लाम और गाजियान-ए- इस्लाम के स्थान पर मुजाहिदान-ए-इकबाल और गाजियान-ए-दौलत जैसे उदार शब्दों का प्रयोग करता है। मध्यकालीन इतिहास लेखन की यह एक नई शैली थी परंतु वह अपने लेखन शैली में कठिन एवं दार्शनिक शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग करने के कारण अकबरनामा को गैर दिलचस्प भी बना देता है।

तबकात-ए-अकबरी-यह पुस्तक निजामुद्दीन अहमद के द्वारा लिखी गई। वह एक विद्वान व्यक्ति था,उसके पिता बाबर के जमाने से ही मुगलों की सेवा में थे।निजामुद्दीन हुमायूं एवं अकबर के काल से मुगलों की सेवा में रहा था। अकबर के द्वारा वह कई उच्च पदों पर भी

नियुक्त किया गया था ।नौ भागों में लिखी गई यह पुस्तक हिंदुस्तान का एक आम इतिहास है। सल्तनत दिल्ली एवं मुगलों का इतिहास पहले दो हिस्सों में दिया गया है। दक्कन, गुजरात, मालवा, बंगाल, जौनपुर, कश्मीर, सिंध और मुल्तान के हालात शेष भागों में दिया गया है।

मुंतखाब-उत-तवारीख- अब्दुल कादिर बदायूनी द्वारा लिखी गई यह पुस्तक मुगल काल की एक महत्वपूर्ण तवारीख है। बदायूनी अकबर के प्रति नकारात्मक भावना रखता था क्योंकि उसका मानना था कि अकबर के शासन करने का तरीका इस्लाम विरोधी है और वह गैर-मुस्लिमों के प्रति उदार रवैया रखता है।अतः बदायूनी का ऐसा मानना था कि यह मुस्लिमों के प्रति धोखेबाजी है और सिर्फ मुस्लिमों को ही प्रशासन के उच्च पदों पर नियुक्त किया जाना चाहिए।

एक साधारण व्यक्ति बदायूनी की तारीख को नजरअंदाज कर सकता है परंतु इतिहासकार के लिए यह अकबर कालीन स्थितियों के प्रति एक नए नजरिए की भी सूचना प्रदान करता है। यहां से अंदाजा लगाया जा सकता है कि अकबर की उदारता एवं धर्मनिरपेक्षता का असर क्या हुआ।

बदायूनी का जन्म 1540 टोडा राजस्थान में हुआ था ।उसने बड़े-बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की थी, जिनमें से शेख मुबारक अबुल फजल के पिता भी शामिल थे। 1574 मे वह आगरा आया और यहीं पर अकबर की सेवा में हाजिर हुआ ।इस समय अकबर अनेक प्रशासनिक एवं धार्मिक सुधारों के दौर से गुजर रहा था। बदायूनी को एक इमाम के पद पर नियुक्त कर 1000 बीघा की मदद -ए -मास भूमि दी गई। इसी समय इबादत खाना का परीक्षण भी चल रहा था, यद्यपि अकबर बदायूंनी के ज्ञान एवं प्रतिभा से प्रभावित था परंतु वह अबुल फजल के उदारवादी नजरिए के प्रति अधिक लगाव रखता था और अकबर की नीतियों पर अबुल फजल का प्रभाव भी रहता था। बदायूनी इस बात पर ईर्ष्या रखता और अबुल फजल को अपनी तरक्की में बाधा मानता था।

बदायूनी का ऐसा मानना था कि अकबर एवं अबुल फजल की उदारवादी नीतियां इस्लाम विरोधी हैं और वह उनकी सदैव आलोचना करता रहेगा।बदायूनी कट्टर इस्लामी नीतियों को लागू कराना चाहता था और इसे ना लागू करने के लिए वह अकबर को दोषी मानता था। 1575 में उसकी मदद-ए -मास से संबंधित भूमि पर भी अकबर के सुधारों की तलवार चली जिससे वह और अधिक नाराज हो गया ।

फिर 1579 में जब इबादत खाना का दरवाजा सभी धर्मों के लिए खोल दिया गया तो वह इससे और अधिक खिन्न हो गया।अतः उसकी यह नाराज़गी एवं अकबर के प्रति नकारात्मक सोच उसके लेखन में भी दिखाई पड़ती है।

जब 1590 में बदायूनी ने अपनी तारीख लिखनी शुरू की तो उसका ऐसा मानना था कि एक ऐसा दल है जो इस्लाम को वेइज्जत करने एवं उसकी जड़ें खोदने में लगा हुआ है ,स्वयं बादशाह एवं अबुल फजल इसका नेतृत्व कर रहे हैं ।यह नजरिया उसकी तारीख में भी सम्मिलित दिखाई पड़ता है।

बदायूनी ने अपने लेखन में अपनी सोंच, दुश्मनी ,ईर्ष्या एवं पसंद ,नापसंद को शामिल किया है ।अतः इस तवारीख को बहुत सावधानी से प्रयोग करना चाहिए ।वह कट्टर इस्लामिक नीतियों को लागू करने के पक्ष में था और वह अकबर की उदार नीतियों से घृणा करता था। उसके सुधारों को वह इस्लाम विरोधी मानता था ।साथ ही बदायूनी के लेखन से यह भी पता चलता है कि वह धर्म एवं धार्मिक नीतियों में अधिक रूचि रखता था, प्रशासनिक कार्यों के प्रति उसका विशेष लगाव नहीं था ,इसलिए वह किसी भी राजनीतिक घटना का विस्तार से वर्णन नहीं करता परंतु यह तमाम कमियां इस पुस्तक के

महत्व को कम नहीं कर पाती और अकबर के काल को जानने एवं समझने में इस तवारीख का महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

16 वीं शताब्दी के बाद भी अकबर की मृत्यु के पश्चात मुगल बादशाहों के काल में भी तारीख लेखन का यह सिलसिला जारी रहा। इसके लिए बादशाहों द्वारा व्यक्तिगत रूचि भी ली गई ।इनमें तुजके-जहांगीरी का विशेष महत्व है यह स्वयं जहांगीर के द्वारा लिखी गई थी ।इसके अतिरिक्त मुतमिद खान की इकबालनामा-ए-जहांगीरी भी जहांगीर काल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। अब्दुल हमीद लाहौरी का बादशाहनामा एवं सादिक खान की तारीख शाहजहानी शाहजहां के काल का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है। काजिम सिराजी का आलमगीरनाम एवं आकत खान की वाकयात-ए- अलमगीरी, सुजान राय भंडारी की खुलासत-उत-तबारीख औरंगजेब के काल की घटनाओं की जानकारी के लिए अहम स्रोत है। खफी खान की मुंतखाब-उल- लुबाब औरंगजेब के काल का आलोचनात्मक विवरण देती है। भीमसेन सक्सेना की नुस्खा-ए -दिलकुशा एवं मुशताइद खान की मासीर-ए-आलमगीरी औरंगजेब काल के लिए अहम तारीखें हैं।

संदर्भ-

1.वर्मा ,हरिश्चंद्र,(2015)*मध्यकालीन भारत, भाग 2* ,दिल्ली दिल्ली विश्वविद्यालय ,पृ. 615-642।

2.भार्गव, मीणा,(2010)*एक्सप्लोरिंग मीडिएवल इंडिया भाग 2* ,दिल्ली, ओरियंट ब्लैकस्वान,पृ.39-74।

लेख से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न-

प्रश्न 1- अध्ययन स्रोत के रूप में फारसी साहित्य परंपराओं के महत्व की संक्षिप्त विवेचना करें।

प्रश्न 2- बदायूनी एवं अबुल फजल में से किसी ने भी अकबर का मूल्यांकन निष्पक्ष रुप से नहीं किया है, मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 3- अकबर के शासन काल के अध्ययन स्रोत के रूप में अबुल फजल के लेखन का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 4- इतिहासकार के रूप में अबुल फजल और बदायूनी का तुलनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

****